Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
January to March 2025 E-Journal, Volume I, Issue XLIX, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

अथर्ववेद में गोधन चिन्तन

डॉ. नारायण सिंह राव* अंकिता शर्मा **

*सहायक आचार्य (संस्कृत) ज.रा.ना. राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय,उदयपुर (राज.) भारत
** शोधार्थी (संस्कृत) ज.रा.ना. राजस्थान विद्यापीठ विश्वविद्यालय,उदयपुर (राज.) भारत

प्रस्तावना

एकैकयैषा सृष्टया संबभूव यत्र गा असृ जन्त भूतकृतो विश्वरूपा:।

प्रभु सृष्टि के आरंभ का ज्ञान देते है। यह वेदवाणी सब पदार्थों का निरुपण करती हुई हमारा शुभ्र करती है। विश्व के सबसे प्राचीनतम ग्रंथों में वेदों का स्थान सर्वोपरि है। वेद भारतीय संस्कृति और परंपरा के आधार रहे हैं। यह जीवन जीने की एक ग्रंथावली के रूप में एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक स्थानांतरित होते रहे हैं। वेदों में विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु का समावेश रहा है। भारतीय चिंतन केवल मानव जीवन तक ही सीमित नहीं रहा है अपितु यह पशु पक्षियों में भी आत्मसाक्षात्कार करता रहा है। इसी आत्म साक्षात्कार के कारण गाय को माता के रूप में भारतीय संस्कृति ने स्वीकार कर लिया। इसे स्वीकार करने का एक प्रमुख कारण जिस प्रकार माता अपने वात्सल्य से बच्चे का पालन पोषण करती है, उसी प्रकार गाय भी अपने दूध से मानव को नवजीवन प्रदान करती है।

'माता रुद्राणां दुहिता वसूनां
स्वसादित्यानाममृतस्य नाभि:।'[1]

इससे स्पष्ट होता है कि गाय को इतना सम्मान देकर माता क्यों माना जाता है ? वेदों के अनुसंधान के समय ज्ञात होता है कि वैदिक काल से गायों को सर्वोपरि स्थान प्रदान किया जाता रहा है।

गाय का स्वरूप – समुद्र मंथन में जब रत्नों की प्राप्ति हुई तो उसमें से एक रत्न कामधेनु भी थी। उसी कामधेनु का वर्णन हमें विभिन्न प्रकार के वैदिक साहित्यों में देखने को मिलता हैं। अथर्ववेद के चौथे अनुवाक के सातवें सूक्त का अध्न करने पर हमें धेनु के स्वरूप को विस्तारपूर्वक जानने का मौका मिलता है। इसके अनुसार गाय के प्रत्येक अंग में किसी न किसी देवता का वास माना गया है। जो कुछ निम्न प्रकार है।

गाय के दो सींगों को प्रजापति और परमेष्ठी तथा इंद्रा सिर्फ अगली ललाट और या गले की घेटी मानी है।

'प्र नु वोचं चिकितुषे जनाय मा गामनागामदितिं वधिष्ट।
प्रजापतिश्च परमेष्ठी च शृंगे इन्द्र: शिरो अग्निर्ललाटं यम:
कृकाटम्।।'[2]

आगे के मंत्रों में गाय की जीभ को विद्युत मरुद्गण को दांत , रेवती को गर्दन, कृतिका को कंधे और सूरज को ककुद के समीपस्थ का भाग बताया गया है।[3] आगे के मंत्रों में गोद अंतरिक्ष को, बृहस्पति को ककुद का भाग माना हैं। **श्येन: क्रोडोन्तरिक्षं पाजस्यं बृहस्पति: ककुद् बृहती: कीकसा:।**[4] इसके साथ ही देवशक्तियों को पीठ का भाग बतलाया गया है। **देवानां पत्नी: पृष्टय उपसद: पार्श्व: ।**[5] मित्र और वरुण गाय के दोनों कंधे त्वष्टा और अर्यमा बाहरी भाग और महादेव को इसकी भुजाएँ माना है। **मित्रश्च वरुणश्चांसौ त्वटा चार्यमा च दोषणी महादेवो बाहू।**[6] इंद्राणी को कमर का भाग, वायु को पुंछ और पवमान को बाल का स्वरूप दिखाया गया है। **इन्द्राणी भसद् वायु: पुच्छं पवमानो बाला।**[7] धाता को उरु और सविता को जानू, इसी प्रकार के गंधर्व को जंघाए और अप्सराओं को खुरभाग तथा अदिति को खुर माना चेतना को गाय का हृदय क्षेत्र माना है। है। **धाता च सविता चाष्ठीवन्तौ जंघा गन्धर्वा अप्सरस: कुष्ठिका अदिति: शफा:।**[8] मेघों को स्तन और गर्जन करने वाले मेघों को दूध से भरे हुए थन का रूप बताया है।

नदी सूत्री वर्षस्यपतयस्तनास्तनंयित्नुरुध:।[9] नक्षत्रों को गाय का विभिन्न रूप बताया है। **नक्षत्राणि रूपम्।**[10]

अथर्ववेद के पंचम अनुवाक के 10 वें सूक्त के 34 वें मंत्र में गाय की महिमा बताते हुए बताया है कि सूर्य का प्रकाश जहाँ तक पहुँचता है, वह सब गौ ही है। मनुष्य जिस गौ पर जीवित रहते हैं , उसी पर देवता जीवन यापन करते हैं।

वशां देवा उप जीवन्ति वशां मनुष्या उत।
वशेदं सर्वमभवद् यावत् सूर्यो विपश्यति।।[11]

अथर्ववेद के 10 वें सूक्त में ही गाय को अवध्य मानते हुए उसके स्वरूप को प्रणाम करते हुए कुछ इस प्रकार वर्णित किया गया है।

नमस्ते जायमानायै जाताया उत ते नम:।
बालेभ्य: शफेभ्यो रूपायाध्न्ये ते नम:।।[12]

सृष्टि में वेदों के साथ उत्पन्न इस कामधेनु को हम आदरपूर्वक धारण करते हैं तथा इसके विभिन्न अंगों को नमस्कार करते है। उपरोक्त मंत्रों के आधार पर हम सभी इस बात से आश्वस्त होते हैं कि कामधेनु के अंग प्रत्यंग में देवताओं के स्वरूप का वास होता है।

अथर्ववेद के पंचम अनुवाक में धेनु को इंद्र का रूप ही बताते हुए लिखा है–

इमा या गाव: स जनास स इन्द्र।

आगे हम अथर्ववेद में वर्णित गोधन के महत्त्व के बारे में अध्न करेंगे।

गोधन का महत्त्व – कालांतर में हो सकता है कि पशु और मनुष्य एक दूसरे के शत्रु के रूप में रहे हो, किंतु एक दूसरे की आवश्यकता को महसूस करते हुए वे एक दूसरे के पूरक होकर रहने लगे। आवश्यकता चाहे सुरक्षा की रही हो अथवा भोजन एवं आवास की। जो एक दूसरे के बिना पूर्ण नहीं हो सकती थी। किसी पूर्णता को प्राप्त करने के लिए वे एक दूसरे के सहयोगी बनते चले

गए और एक समय ऐसा आया कि वे एक दूसरे के पूरक होकर रह गए। यही बात अथर्ववेद में कुछ इस प्रकार लिखी हुई मिलती है।

सं स्रवन्तु पशव: समस्वा समु: पूरुषा:।
संधान्यस्य या स्फाति: संस्राव्येन हविषा जुहोमि।।[13]

वर्तमान समय में हम कितनी भी आधुनिकता की ओर दौड़ जाए, किंतु इसके पश्चात भी पशुओं का महत्त्व कभी समाप्त नहीं हो सकता है। ऐसे ही पशुओं में एक पशु जिस पशु कहना अनुचित होगा क्योंकि उसको करूणामय स्वरूप मानकर उसकी पूजा आराधना की जाती है तथा वह माँ के समान मानी जाती है। इतना ही नहीं उसे विराट ब्रह्म का स्वरूप भी माना जाता है। उसमें सभी देवताओं का निवास बताया गया है। वह है– गो।

गोधन का अपने आप में विशिष्ट महत्त्व होने के कारण वेदों में इसका उन्मुक्त कंठ से वर्णन किया गया है। अथर्ववेद के चतुर्थ कांड के प्रथम अनुवाक के 39 वें सूक्त के द्वित्तीय मंत्र में पृथ्वी को गाय के समान बताया है। **पृथिवी धेनुस्तस्या.....।**[14] गाय का सर्वाधिक महत्त्व दूध के लिए है। प्राचीन काल में गायों का पालन दुग्ध आदि की पूर्ति के साधन के रूप में रहा है। तभी तो वेदों में गाय रखने की बात को इंगित करने वाला मंत्र हमें कुछ इस रूप में देखने को मिलता है।

अर्थात् बल प्रदान करने वाली गोधन –दुग्ध को हम सींचते हैं। हमारी संतानें घी दूध के सेवन से बलदायक रस प्राप्त करती हुई बलिष्ठ हो। हम गो पतियों के पास गो सदा स्थिर रहे।

सं सिंचामि गवां क्षीरं समाज्येन बलं रसम्।
संसिक्ता अस्माकं वीरा ध्रुवा गावो मयि गोपतौ।[15]

वेदों में गोधन रक्षा हेतु भी निर्देश स्पष्ट रूप से प्राप्त होते हैं। अथर्ववेद के भाष्यकार पंडित हरिशरण सिद्धान्तालंकार ने एक मंत्र का भाष्य करते हुए लिखा है कि,ग्वालो को समझदारी से पशुओं का अच्छी प्रकार संरक्षण करना चाहिए तथा लौटते हुए पशुओं का गृहपत्नी स्वागत करती हुई उन्हें ठीक स्थान पर बांधे। इतना ही नहीं उनके लिए उचित चारे पानी की व्यवस्था भी करे। यही उनका परम कर्तव्य बताया है।

इमं गोष्ठं पशव: सं स्रवन्तु बृहस्पतिरा नयतु प्रजानन्। सिनीवाली नयत्वाग्रमेषामाजग्मुषो अनुमते नि यच्छ।।

राजा अपनी प्रजा को संबोधित करते हुए कहता है कि कोई भी राज्य को छोड़कर नहीं जाएं। पति घर में अन्न की कमी नहीं होने दे। गायों को अवश्य रखें तथा घर के सभी सदस्यों के पालन पोषण पर ध्यान दें। आगे वह देवता से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि जगत के देवता प्रजा की कामना पूर्ति के निर्मित्त आप सभी एक साथ संयुक्त हो।

इहेदसाथ न परौ गमाथेर्यो गोपा: पुष्टपतिर्व आजत्।
अयंऽग्निर्दीदायद् दीर्घमेजा सजातैरिद्धोऽप्रतिबूवद्भि:।।[16]

अथर्ववेद के चौथे कांड के 21 वें सूक्त में इंद्र देवता से प्रार्थना करते हुए कहा गया है कि आप हमें गोधन प्रदान करें। इसी मंत्र में गायों से भी प्रार्थना की गई है कि वे हमे दुग्ध आदि पदार्थ प्रदान कर आनंदित करें।

आ गावो अग्मन्नुत भद्रमक्रन्त्सीदन्तु गोष्ठे रणयन्तवस्मे।
प्रजावती: पुरुरूपा इह स्युरिन्द्राय पूर्वीरुषसो दुहाना:।।[17]

इसी के आगे के मंत्रों में इन्द्र द्धारा प्रदत्त गाय कभी नष्ट नहीं होती। चोर लुटेरे का भय भी उन्हें नहीं होता है तथा शस्त्रों से भी उनकी क्षति नहीं हो सकती। गायों को चराने वाले पालक जिन गायों से देवता की पूजा करते हैं, उन्हीं गायों के संग ग्वालों की आयु भी लंबी एवं सुख पूर्वक होती है।

न ता नशन्ति न दभाति तस्करो नासामामित्रो व्यथिरादधर्षति।
देवांश्चर्याभिर्यजते ददाति च ज्योगित् ताभि: सचतेगोपति: सह।।[18]

अर्थात् इंद्र देवता हमारे घरों में गाऊं का निवास बनाए अर्थात् गोधन हमारे घर में निवास करें। वे सब भी हमें दूध देती हुई आनंदित करने वाली हो। यह अनेक रंग रूप वाली गाए बछड़ों सहित संध्याकाल में इंद्र को अपने दूध का पान कराये। इसी प्रकार अथर्वऋषि प्रजापति से अपनी गायों को निरोगी रखने की प्रार्थना करते है।

क: पृश्नि धेनुं वरुणेन दत्तामथर्वण सुदुघां नित्यवत्साम्।
बृहस्पतिना सख्यं जुषाणो यथावशं तन्व: कल्पयाति।।[19]

इसी प्रकार की प्रार्थना अथर्ववेद के चौथे अनुवाक के 16 वें सूक्त में ऋषि अथर्व भगदेवता से प्रार्थना करते हुए कहते हैं कि हमें गाय, घोड़े एवं पुत्र–पौत्रादि प्रदान करें।

भग प्रणेतर्भग सत्यराधो भगेमां धियमुदवा ददन्न:।
भग प्रणो जनय गोभिरश्वै भग प्र नृभिर्नृवन्त:।।[20]

अथर्ववेद में गाय के दूध का महत्त्व बताते हुए लिखा गया है कि प्राण साधना करने वाले साधकों को गो दूध का उपयोग करना चाहिए। इसके उपयोग से स्फूर्ति बनी रहती है।

पयो धेनूनां रसमोषधीनां जवमर्वतां कवयो य इन्वथ।
शग्मा भवन्तु मरुतो न: स्योनास्ते नो मुञ्चन्त्वं हस:।।[21]

हे मरुत देवता । हम प्राण साधना करते हुए गोदुग्ध और औषधियों का सेवन करें। जिससे हमारी इन्द्रिया ऊर्जावान हो। यह हमें प्राणशक्ति व सुख प्रदान करें। प्राण साधना का हमें क्या लाभ है ? इसका उत्तर भी हमें इसी वेद के सातवें कांड में कुछ इस तरह लिखा हुआ प्राप्त होता है।

समिद्धो अग्निर्वृषणा रथी दिवस्तप्तो घर्मो दुह्यते वामिषे मधु।
वयं हि वो पुरुदमासो अश्विनो हवामहे सधमादेषु कारव:।।[22]

अर्थात् प्राण साधना से हृदय में प्रभु का प्रकाश होता है। ज्ञान रूपी सूर्य का उदय होता है। शरीर में वीर्य की उर्ध्व गति होती है और शरीर रूपी ग्रहों का सुंदरता से पालन होता है। इसी के आगे मंत्रों में हमें यह परामर्श दिया जाता है की प्राण साधक को चाहिए कि वह गो दूध का सेवन करें।[23]

हे सविता देवता, हम गायों को दूहना चाहते हैं इसीलिए आप इस निर्मित्ता दुग्ध को प्रेरित करें।

उपह्वये सुदुघां धेनुमेतां सुहस्तो गोधुगुत दोहदेनाम्।
श्रेष्ठं सवं सविता साविषन्नोऽभीद्धो घर्मस्तदु षु प्रवोचत्।।[24]

हे सविता देवता ! हम स्वच्छ हाथों से गायों के दुग्ध को दुहने के निमित्ता उस का आह्वान करते हैं। सर्व प्रेरक सविता देवता हम सबके निर्मित इस दुग्ध को प्रेरित करें।

वेदों में गोधन की केवल आराधना ही नहीं की गई अपितु उनके साथ साथ उनका संवर्धन एवं संरक्षण करने के पुट दिखाई देते हैं।

गोधन का संवर्धन एवं संरक्षण – वेदों में हमें गोधन के संवर्धन एवं संरक्षण की परिचर्चा भी दिखाई देती है। कुछ मंत्रों में पशु संवर्धन की इतनी सुन्दर व्यवस्था लिखी हुई है जिसको हमारे पूर्वजों ने अपनाया, केवल इसे अपनाया ही नहीं अपितु उसके साथ –साथ अगली पीढ़ी में स्थानांतरित भी किया। तभी तो हम देखते हैं। सभी जगह एक ही समान गोधन को संरक्षण एवं संवर्धन प्राप्त है। अथर्ववेद में यामिनी देवता से निवेदन करते हुए कहते हैं कि वह गायों और अन्य पशुओं का पोषण करती हुई उन्हें पुष्टि और संरक्षण प्रदान करें। **पशून् यमिनि पोषय।**[25] आगे के मंत्रों में यामिनी देवता से प्रार्थना

करते हुए ऋषि ब्रह्मा कहते हैं कि आप गायों, घोड़ों , मनुष्य और धरती पर विचरण करने वाले समस्त पशु पक्षियों के लिए कल्याणकारी और सुख प्रदान करने वाली हो।

शिवा भव पुरुषेभ्यो गोम्यो अश्वेभ्य: शिवा।
शिवास्मै सर्वस्मै क्षेत्राय शिवा न इहैधि।।[26]

अथर्ववेद के सातवें अनुवाक् में ग्वालों को निर्देश दिया गया है कि गायों के लिए उत्तम घास, स्वच्छ जल की व्यवस्था हो, जिससे वे हष्ट पुष्ट हो सके।

सूयवसाद् भगवती हि भूया अधा वयं भगवन्त: स्याम।
अद्धि तृणमघ्न्ये विश्वादानीं पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती।।[27]

इसी अथर्ववेद के अष्टक कांड में राजाओं को निर्देशित किया गया है कि वे ऐसे नियम बनाए जिससे कोई भी मनुष्य पशुओं पर अत्याचार न कर सके।

य: पौरुषेयेण क्रविषा समङ्क्ते यो अश्वयेन पशुना यातुधान:।
यो अध्याया भरति क्षीरमघ्ने तेषां शीर्षाणि हरसापि वृश्च।।[28]

हे राजन ! कोई भी मनुष्य किसी अन्य मनुष्य पर अत्याचार नहीं करें। कोई भी मानव घोड़ों एवं अन्य पशुओं के साथ अमानवीय व्यवहार नहीं करें और न ही उसकी हत्या करें। ग्वाला भी यदि बछड़े को उचित मात्रा में दूध न देकर सारे दूध को स्वयं रख लें अथवा उसे दूध दुहने के बजाए पीड़ित करे तो राजा को उसे दंड देकर इस अपराध को रोकने का प्रयास करना चाहिए। इसके पश्चात भी यदि कोई ऐसा करता है तो यह गोदुग्ध राक्षसों के लिए विष के समान हो जाए।[29] कहने का अभिप्राय यह है कि जब गोधन को पीड़ित किया जाता है तब उनके दूध आदि में विष की उत्पत्ति हो जाती है। इसी के आगे के मंत्रों में आदेशित किया गया है कि जो भी गाय को पीड़ा दे कर दूध का हरण करने वाला है, उसे वर्ष भर दूध न मिलने का दंड दिया जाए। **संवत्सरीणं पय उस्त्रियायास्तस्य मशीद् यातुधानो नृचक्ष:।**[30]

वेदों में विज्ञान के लेखक डॉ. कपिलदेव द्विवेदी ने अपनी पुस्तक में यजुर्वेद के मंत्रों का उल्लेख करते हुए लिखा है गाय घी, दूध आदि प्रदान करने का साधन है। उसे नहीं मारना चाहिए।[31] गोहत्या करने वालों को समाज से बहिष्कृत करने का विधान सभी वेदों में वर्णित है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. ऋग्वेद 1.101.15 आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, चॉदनी चौक, नई दिल्ली, पृ.सं.
2. अथर्ववेद मंत्र 4.7.1, आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, चॉदनी चौक, नई दिल्ली, पृ.सं. 517
3. 'विद्युज्जिह्वा मरुतो दन्ता रेवतीर्ग्रीवा:, कृत्तिका स्कन्धा धर्मो वह:।' अथर्ववेद मंत्र 4.7.3, आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, चॉदनी चौक, नई दिल्ली, पृ.सं. 517
4. वही..... मंत्र 4.7.5, पृ.सं. 517
5. वही.....मंत्र 4.7.6, पृ.सं. 517
6. वही..... मंत्र 4.7.7, पृ.सं. 517
7. वही.....मंत्र 4.7.8, पृ.सं. 517
8. वही..... मंत्र 4.7.10, पृ.सं. 518
9. वही.....मंत्र 4.7.14, पृ.सं. 518
10. वही.....मंत्र 4.7.15, पृ.सं. 518
11. वही.....मंत्र 5.10.34, पृ.सं. 592
12. वही..... मंत्र 5.10.1, पृ.सं. 588
13. वही..... मंत्र 2.4.26.3, पृ.सं. 91
14. वही.....मंत्र 4.1.39, पृ.सं. 207
15. वही.....मंत्र 2.4.26.4, पृ.सं. 91
16. अथर्ववेदभाष्यम् (प्रथम भाग) मंत्र 3.8.4, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, कृतिनोवा संजीव नेवर, पृ.सं. 200
17. अथर्ववेदभाष्यम् (द्वितीय भाग) मंत्र 5.21.1, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, कृतिनोवा संजीव नेवर, पृ.सं. 73
18. अथर्ववेद मंत्र 5.21.3, आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, चॉदनी चौक, नई दिल्ली, पृ.सं. 180
19. अथर्ववेदभाष्यम् (तृतीय भाग) मंत्र 7.104.1, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, कृतिनोवा संजीव नेवर, पृ.सं. 114-115
20. अथर्ववेदभाष्यम् (प्रथम भाग) मंत्र 3.16.3, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, कृतिनोवा संजीव नेवर, पृ.सं. 226
21. वही..... मंत्र 4.27.3, पृ.सं. 92-93
22. अथर्ववेद मंत्र 7.73.1, आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, चॉदनी चौक, नई दिल्ली, पृ.सं. 405
23. पयोऽयं स .....पिबतं रोचते दिव:। अथर्ववेदभाष्यम् (तृतीय भाग) मंत्र 7.73.3, पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, कृतिनोवा संजीव नेवर, पृ.सं. 76-77
24. वही..... मंत्र 7.73.7 पृ.सं. 77
25. अथर्ववेद मंत्र 5.28.4, आचार्य वेदान्त तीर्थ, मनोज पब्लिकेशन, चॉदनी चौक, नई दिल्ली, पृ.सं. 142
26. वही.....मंत्र 8.28.3 पृ.सं. 142
27. वही..... मंत्र 7.73.11 पृ.सं. 406
28. अथर्ववेदभाष्यम् (तृतीय भाग) मंत्र 8.3.15,पं. हरिशरण सिद्धान्तालंकार, कृतिनोवा संजीव नेवर,पृ.सं. 158
29. 'विषं गवां यातुधाना' वही.....मंत्र 8.3.16 पृ.सं. 159
30. वही.....मंत्र 8.3.17 पृ.सं. 159
31. वेदों में विज्ञान, लेखक- डॉ. कपिलदेव द्विवेदी, प्रकाशन- विश्वभारती अनुसंधान परिषद्, ज्ञानपुर (भदोही) पृ.सं. 159

****